15

बैंकिंग और साख

मुद्रा और बैंकिंग साथ-साथ चलते हैं। वे एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए मुद्रा का अध्ययन करने के पश्चात् हमें बैंकिंग का भी अध्ययन करना चाहिए। आधुनिक समाज में बैंक एक बहुत ही महत्वपूर्ण संस्था है। ध्यान दो, जब समाज में मुद्रा के विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग करने के लाभों को अनुभव किया, तो उसने मुद्रा को एक सुरक्षित स्थान पर संचय करने की आवश्यकता का भी अनुभव किया। अंत में यह सुरक्षित स्थान समय के साथ, बैंक के रूप में विकसित हुआ है, जो विभिन्न प्रकार से मुद्रा में व्यवहार करता है। लोग बैंक में विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए जाते हैं; जैसे अपनी अधिशेष मुद्रा जमा करने, नकद मुद्रा में भुगतान करने के लिए अपने खाते से मुद्रा निकालने के लिए, ऋण लेने के लिए आदि। अर्थव्यवस्था में बैंक, उत्पादन, वितरण और व्यवसायिक गतिविधियों को सुगम बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- बैंक और बैंकिंग का अर्थ;
- बैंक के कार्यों की व्याख्या;
- साख का अर्थ ओर साख सृजन की प्रक्रिया;
- भारत में विभिन्न प्रकार के बैंकों में अन्तर।

15.1 बैंक और बैंकिंग का अर्थ

बैंक एक संस्था है, जो जनता से जमा के रूप में मुद्रा स्वीकार करती है और उन्हें ऋण देती है। बैंकिंग से अभिप्राय लोगों को ऋण देने या निवेश करने के लिए, जमा स्वीकार करना है जिसका मांगने पर भुगतान किया जा सकता है, जिसे चैक, ड्राफ्ट, आदेश या अन्य प्रकार से निकाला जा सकता है।

15.2 बैंक के कार्य

ऊपर दिए गए अर्थ से किसी बैंक के कार्यों को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। बैंक के प्राथमिक कार्य निम्नलिखित हैं:

1. जनता से जमा स्वीकार करना।
2. ऋण देना।

कुछ बैंकों के लोगो के चित्र

भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India With you - all the way | पंजाब नैशनल बैंक punjab national bank | ICICI Bank

15.2.1 जनता से जमा स्वीकार करना

बैंक जनता से मुद्रा के रूप में जमा स्वीकार करता है जिसमें व्यक्ति, समूह और व्यवसायिक फर्म आदि शामिल हैं। इस पर ध्यान देना चाहिए कि जब कोई व्यक्ति बैंक में मुद्रा जमा करना चाहता है, तो बैंक जमाकर्ता के नाम में खाता खोलकर जमा स्वीकार करता है। बैंक जमाकर्ता को एक खाता संख्या देता है। जब भी जमाकर्ता दोबारा मुद्रा जमा करना चाहता है, उसे खाता संख्या का उल्लेख करना पड़ता है जिससे कि बैंक उस खातें में मुद्रा रख सके। यदि जमाकर्ता अपने खाते से मुद्रा निकलवाता है तो बैंक जमाकर्ता के खाते से मुद्रा की कटौती कर देता है। दूसरी ओर, जनता की कुछ प्रकार की जमाओं पर बैंक ब्याज देता है।

ध्यान दें कि बैंक जमाकर्ताओं को चैकबुक देता है। जमाकर्ताओं के द्वारा चैकों का प्रयोग बैंक से मुद्रा निकालने और किसी पक्ष को बैंक के माध्यम से भुगतान करने के लिए किया जाता है।

15.2.2 ऋण देना

बैंक उन लोगों को ऋण देता है जो ऋण लेना चाहते हैं और जिनकी भविष्य में उस ऋण की वापसी भुगतान करने की क्षमता है। इससे क्या तात्पर्य है? इसके लिये सर्वप्रथम हमें यह जानना चाहिये कि लोग ऋण क्यों लेते हैं? लोग मुद्रा उधार लेते हैं, जब वे आज कोई वस्तु खरीदना चाहते हैं या कोई व्यवसाय करना चाहते हैं, जिसके लिए उनके पास वर्तमान में पर्याप्त मुद्रा नहीं है। किन्तु उनके पास भविष्य में मुद्रा की वापसी करने की क्षमता है। वस्तुएं जैसे टेलीविजन, फ्रिज, कपड़े धोने की मशीन, कार आदि महंगी वस्तुएं हैं। इसी प्रकार, मकान बनाने या क्रय करने में बहुत अधिक मुद्रा की आवश्यकता होती है। इन सभी वस्तुओं के लिए बैंक ऋण उपलब्ध कराता है। बैंक व्यवसाय आरम्भ करने के लिए भी ऋण देता है।

15.2.3 कीमती सामान रखना

बैंक द्वारा एक और कार्य सम्पन्न किया जाता है। बैंक लोगों की महंगी वस्तुएं भी रखता है जैसे आभूषण, सम्पत्ति के दस्तावेज आदि। आमतौर पर लोग अपनी महंगी वस्तुएं सुरक्षित अभिरक्षा में रखना चाहते हैं जिसे बैंक लॉकर सुविधा के रूप में उपलब्ध कराते हैं।

पाठगत प्रश्न 15.1

1. उस संस्था का नाम बताओ जिसमें कोई अपनी अधिशेष मुद्रा जमा कर सकता है।
2. किन्हीं ऐसे दो उद्देश्यों के नाम दो जिसके लिए बैंक द्वारा ऋण स्वीकृत किया जा सकता है।

आओं कुछ करें 15.1

अपने माता पिता के साथ एक बैंक में जाओ और पता लगाओ कि बैंक लोगों की सहायता किस प्रकार करता है और यह क्या कुछ करता है।

15.3 साख का अर्थ

साख को, भुगतान प्राप्त करने के दावे के रूप में परिभाषित किया जाता है। जब एक बैंक लोगों को ऋण देता है तो वह एक ऋण दाता बन जाता है और वह व्यक्ति जो बैंक से ऋण लेता है, ऋणी कहलाता है। जब बैंक आज ऋण देता है तो वह भविष्य में उस व्यक्ति से ऋण वसूल करने का प्रबन्ध भी कर लेता है। इसका अभिप्राय यह है कि बैंक भविष्य में ऋणी से मुद्रा के लिये दावा कर सकता है। इसी के अनुसार, बैंक अपनी जमाओं में विस्तार करने में समर्थ होता है। इसे बैंक द्वारा साख का सृजन कहते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि साख का सृजन ऋण देना और ऋण लेने के कार्य द्वारा होता है।

15.4 साख सृजन की प्रक्रिया

अब प्रश्न उठता है, बैंक साख का सृजन कैसे करता है? अन्य शब्दों में, बैंक दूसरों को ऋण देने के लिए मुद्रा का प्रबन्ध कहाँ से करता है और यह ऋण या साख का सृजन कितनी मात्रा में कर सकता है? हम इसका उत्तर नीचे दे रहे हैं :

हम जानते हैं कि बैंक जनता से जमा के रूप में मुद्रा स्वीकार करता है। सामान्य रूप से ये जमा जनता को वापस करनी पड़ती हैं, यदि वह उन्हें निकलवाना चाहती है। इसलिए, यदि सभी व्यक्ति, जिन्होंने बैंक में मुद्रा जमा की है अपनी सारी मुद्रा निकलवा लेते हैं तो बैंक के पास कोई मुद्रा नहीं बचेगी। किन्तु सामान्य रूप से ऐसा नहीं होता।

सामान्य अनुभव से यह देखा गया है कि एक बार कोई व्यक्ति बैंक में मुद्रा जमा करता है तो उसे तुरन्त नहीं निकालता। अधिकतर लोग अपनी जमा में से थोड़ी मात्रा निकालते हैं, जब उन्हें आवश्यकता होती है और शेष राशि बैंक के पास छोड़ देते हैं। इसे सम्भव बनाने के लिए, बैंक अपनी जमा राशि का एक अंश नकद रखता हैं जिसमें से वह उन लोगों को मुद्रा देता रहता है जो इसे निकलवाने के लिए आते हैं। जमा राशि का यह अंश प्रतिशत के रूप में होता है। कुल जमा राशि का कितना प्रतिशत नकद रखा जाता है? इसका निर्णय देश के बैंकिंग प्राधिकरण

द्वारा लिया जाता है। नकद की मात्रा, उन लोगों को देने के लिए सुरक्षित रखी जाती है जो बैंक में मुद्रा निकलवाने के लिए आते हैं। कुल जमा राशि का जो अंश नकद के रूप में रखा जाता है, उसे हम नकद आरक्षण अनुपात कहते हैं। एक बार बैंक नकद आरक्षण अनुपात के आधार पर बैंक में नकद रखी जाने वाली राशि की गणना करता है, वह इस राशि को कुल जमा राशि में से घटा देता है और शेष राशि का प्रयोग ऋण लेने वाले को ऋण देने के लिए करता है। बैंक के इस कार्य से, साख सृजन का कार्य आरम्भ हो जाता है। आइये, निम्न उदाहरण की सहायता से साख सृजन की प्रक्रिया का चरणवद्ध वर्णन करें।

15.4.1 साख सृजन के चरण

सुविधा के लिए, हम यह कल्पना करते हैं कि अर्थव्यवस्था में केवल एक बैंक है। मान लें, बैंकों के प्राधिकरण ने नकद आरक्षण अनुपात 20 प्रतिशत निर्धारित किया है। इसलिए बैंक को उन लोगों को नकद भुगतान करने के लिए जो मुद्रा निकलवाने के लिए आते है, वर्तमान जमा राशि का 20 प्रतिशत नकद रूप में रखना चाहिए।

चरण 1: A नाम का एक व्यक्ति बैंक में 100 रु. जमा करता है जिससे बैंक की जमा राशि में 100 रु. की वृद्धि हो जाती है। नियम के अनुसार, बैंक 100 रु0 का 20 प्रतिशत नकद रखेगा। यह 20 रु. होता है। इसलिए बैंक नकद भुगतान के लिए 20 रु. रखेगा। अतः 100 में से 20 घटाओ। 100 – 20 = 80 रु.। इसलिए बैंक 80 रु. का ऋण देने के लिए प्रयोग कर सकता है।

चरण 2: B नाम का एक व्यक्ति बैंक में 80 रु. ऋण लेने के लिए आता है। बैंक, यह ऋण देने के पश्चात् B से भविष्य में इस मुद्रा की राशि का दावा कर सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि B को ऋण देकर, बैंक 80 रु. की दूसरी जमा का सृजन कर सकता हैं

अब बैंक के पास कुल जमा की गणना कीजिये।

प्रथम, व्यक्ति A ने 100 रु. जमा किए। B को ऋण देकर बैंक 80 रु. का दावा कर सकता है। इसलिए दो चरणों के पश्चात् बैंक की कुल जमा राशि 180 रु. हो जती है अर्थात 100 + 80 = 180 रु.

चरण 3: C नाम का एक अन्य व्यक्ति बैंक से ऋण लेना चाहता है। बैंक C को ऋण के रूप में मुद्रा की कितनी राशि दे सकता है। इससे पहले चरण में हमने देखा कि बैंक B से मुद्रा का दावा करके 80 रु. जमा के रूप में बढ़ा सका। नियम के अनुसार, इसे 80 रु. का 20 प्रतिशत किसी को ऋण देने से पहले नकद के रूप में रखना पड़ता है। 80 रु. का 20 प्रतिशत 16 रु. है। इसलिए बैंक अब 16 रु. नकद रखकर, शेष राशि को ऋण के रूप में देता है। 80 – 16 = 64 रु.। इस प्रकार बैंक C को 64 रु. ऋण के रूप में दे सकता है। दोबारा, इस राशि का C से दावा करने पर बैंक तीसरे चरण में 64 रु. का जमा का और सृजन कर सकता है।

पिछले दो चरणों को जारी रखते हुए हम कह सकते हैं कि तीन चरणों के पश्चात् बैंक की कुल जमा राशि बढ़कर 180 + 64 = 244 रु. या 100 + 80 + 64 = 244 रु. हो गई।

यह श्रृंखला कुछ समय तक चलती रहेगी। किन्तु उसका अंत कब होगा? आप जानते हैं कि प्रत्येक चक्र में बैंक, जमा में वृद्धि का 20 प्रतिशत नकद के रूप में रखता है। आप यह भी जानते हैं कि बैंक ने पहले चरण में अपनी जमा के 100 रु. की वृद्धि से आरम्भ किया था। इसलिए साख सृजन की प्रक्रिया (या जमा में वृद्धि) समाप्त हो जायेगी जब प्रत्येक दौर की जमा का 20 प्रतिशत मिलाकर 100 रु. हो जाता है। अब प्रश्न उठता है किस राशि का 20 प्रतिशत 100 है? उत्तर है कि 500 का 20 प्रतिशत 100 होता है। इसका तात्पर्य यह है कि हमारे वर्तमान उदाहरण में, बैंक की आरम्भिक जमा में 100 रु. की वृद्धि और नकद आरक्षण अनुपात 20 प्रतिशत होने पर कुल साख का सृजन 500 रु. होगा। ये तीनों परस्पर सम्बन्धित हैं। आप जानते हैं कि

20 प्रतिशत $= \frac{20}{100} = \frac{1}{5}$ । यहाँ, $500 = 100 \times \frac{1}{20\%} = 100 \times \frac{1}{5} = 100 \times 5$ । इसके अनुसार हम साख सृजन का निम्न सूत्र दे सकते हैं:

$$\textbf{कुल साख} = \textbf{जमा में आरम्भि वृद्धि} \times \frac{\mathbf{1}}{\textbf{नकद आरक्षण अनुपात}}$$

$$500 = 100 \times \frac{1}{20\%}$$

एक और मुख्य बात यह ध्यान रखें, क्योंकि बैंक जमा राशि 20 प्रतिशत नकद तथा शेष विभिन्न चरणों में ऋण के रूप में बांट दी जाती है, 500 रु. की कुल जमा निम्न प्रकार से बांटी जा सकती है।

नकद आरक्षण = 500 रु. का 20 प्रतिशत = 100 रु.।

ऋण की राशि = 500 – 100 = 400 रु.।

अब हम साख सृजन के विभिन्न चरणों (चक्रों) को निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं।

चरण	जमा में वृद्धि	नकद आरक्षण	ऋण
1	100	20	80
2	80	16	64
3	64	12.8	51.2
4	51.2	10.24	40.96
5	40.96	8.19	32.77
……	……	……	……
……	……	……	……
कुल	**500**	**100**	**400**

अंत में, ध्यान रखें कि साख सृजन की प्रक्रिया में दो प्रकार की जमा का लेखा किया जाता है। पहली आरम्भिक जमा कहलाती है। आरम्भिक जमा बैंक जमा में आरम्भिक वृद्धि है जो कि बैंक जनता से नई जमा के रूप में प्राप्त करता है। हमारे उपर्युक्त उदाहरण में आरम्भिक जमा 100 रु. है जो व्यक्ति A द्वारा आरम्भ में जमा किये गये। दूसरी प्रकार की जमा को द्वितीयक जमा कहते हैं। बैंक द्वारा दिए गए ऋण के कारण प्रत्येक चक्र में जमा का सृजन द्वितीयक जमा कहलाती है। साख का सृजन द्वितीयक जमा में वृद्धि के कारण होता है।

15.4.2 बैंक की साख सृजन क्षमता क्या है?

किसी बैंक की साख सृजन क्षमता नकद आरक्षण अनुपात पर निर्भर करती है। यदि नकद आरक्षण अनुपात अधिक है तो बैंक को जनता को भुगतान करने के लिए नकद राशि अधिक रखनी पड़ती है और उसी के अनुसार ऋण देने के लिए कम राशि उपलब्ध होगी। इसलिए साख का सृजन कम होगा। साख का सृजन अधिक होगा यदि नकद आरक्षण अनुपात कम है। हमारे उपर्युक्त उदाहरण में, कुल साख 500 रु. थी जबकि नकद आरक्षण अनुपात 20 प्रतिशत और जमा में आरम्भिक वृद्धि 100 रु. थी। अब नकद आरक्षण अनुपात घट कर 10 प्रतिशत होने पर कुल साख होगी :

$$100 \times \frac{1}{10\%} = 100 \times \frac{1/10}{100} = 100 \times 10 = 1000 \text{ रु.}$$

पाठगत प्रश्न 15.2

1. एक बैंक ने 200 रु. की जमा प्राप्त की। इसने ऋण लेने वाले को 180 रु. ऋण दिया। नकद आरक्षण अनुपात क्या है?
2. ऊपर दिए गए प्रश्न में (अ) आरम्भिक जमा (ब) द्वितीयक जमा और (स) कुल जमा ज्ञात करो।
3. साख की परिभाषा दो।

15.5 भारत में विभिन्न प्रकार के बैंक

भारत में निम्न प्रकार के बैंक हैं।

1. भारतीय रिजर्व बैंक (RBI), जो कि हमारे देश का केन्द्रीय बैंक है।
2. व्यवसायिक बैंक
3. सहकारी बैंक
4. विकास बैंक

आइये, इनकी संक्षेप में व्याख्या करते हैं।

15.5.1 भारतीय रिजर्व बैंक

भारतीय रिजर्व बैंक देश में बैंकिंग व्यवस्था का शिखर है। इसका तात्पर्य यह है कि और सभी बैंक जैसे व्यवसायिक या सहकारी या विकास बैंक भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बनाए गए नियमों-विनियमों का पालन करते हैं। इसका मुख्य कार्यालय मुम्बई में है। भारतीय रिजर्व बैंक का मुख्य कार्य करेन्सी नोट जारी करना है। विभिन्न प्रकार के अंकित मूल्यों वाली कागजी मुद्रा जैसे 2, 5, 10, 20, 50, 100, 500 और 1000 भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी की जाती है। इन करेन्सी नोटों पर आप भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर देख सकते हैं। गवर्नर के हस्ताक्षर वाला करेन्सी नोट सरकार द्वारा अनुमोदित किया जाता है जिससे कि इसे वस्तुओं और सेवाओं के क्रय और विक्रय के लिए प्रयोग किया जा सके। एक रुपये के नोट और सिक्के तथा एक रूपये से कम के सिक्के वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारी जारी किए जाते हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक का एक अन्य कार्य यह है कि यह सरकार के बैंकर के रूप में कार्य करता है। भारत में केन्द्रीय और राज्य सरकारें, दोनों भारतीय रिजर्व बैंक से ऋण लेती हैं तथा अपनी मुद्रा भारतीय रिजर्व बैंक में जमा करती हैं।

15.5.2 व्यवसायिक बैंक

अभी हम साख सृजन की चर्चा कर रहे थे। बैंक जिसके विषय में हम बात कर रहे थे, वास्तव में एक व्यवसायिक बैंक था। बैंक के कार्य जिनका हमने पहले अध्ययन किया, वे भी व्यवसायिक बैंक के कार्य हैं।

कुछ व्यवसायिक बैंक ऐसे हैं जो सार्वजनिक क्षेत्र में हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ इण्डिया, इंडियन बैंक, कैनरा बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा आदि।

कुछ अन्य व्यवसायिक बैंक हैं जो निजी क्षेत्र में हैं। जैसे आई.सी.आई.सी.आई बैंक, यस बैंक, एच.डी.एफ.सी. बैंक आदि। ये बैंक निजी तौर पर चलाए जाते हैं।

व्यवसायिक बैंकों का उद्देश्य, ऋण पर ब्याज लेकर, बहुत सी सेवाओं जैसे ड्राफ्ट जारी करना, मुद्रा का हस्तांतरण करना आदि की फीस वसूल करके, लाभ कमाना होता है।

15.5.3 सहकारी बैंक

भारत में बहुत से ऐसे बैंक हैं जो सहकारी समितियों द्वारा चलाए जाते हैं और जिस राज्य में वे चल रहे हैं उसके राज्य के नियमों द्वारा संचालित होते हैं। ऐसे बैंक दो प्रकार के होते हैं - कृषि (या ग्रामीण) बैंक और गैर-कृषि (या शहरी) बैंक।

ग्रामीण क्षेत्रों में, सहकारी बैंक, कृषि, पशुओं, मछली पालन आदि के लिए साख उपलब्ध कराते हैं। शहरी क्षेत्रों में सहकारी बैंक, स्वरोजगार की गतिविधियों, लघु उद्योगों, टिकाऊ वस्तुओं जैसे टेलीविजन, रैफ्रिजिरेटर आदि खरीदने के लिए और व्यक्तिगत वित्त के लिए साख उपलब्ध कराते हैं।

सहकारी बैंकों के उदाहरण हैं राज्य सहकारी बैंक, कृषि सहकारी समितियाँ, शहरी सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक और जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक। इन बैंकों के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न नाम हो सकते हैं।

15.5.4 विकास बैंक

देश के आर्थिक विकास की प्राप्ति के लिए उद्योगों और आधारिक संरचना में निवेश करने की आवश्यकता होती है। इसे सम्भव बनाने के लिए भारत में विकास बैंक हैं। ये बैंक लम्बी अवधि के लिए निजी व्यवसायिक कम्पनियों और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाईयों को जो उद्योग स्थापित करना चाहते हैं या आधारिक संरचना का निर्माण करना चाहते हैं, उन्हें ऋण उपलब्ध कराते हैं। विकास बैंकों के कुछ उदाहरण भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम और राज्य वित्त निगम हैं।

पाठगत प्रश्न 15.3

1. व्यवसायिक बैंक, सहकारी बैंक और विकास बैंक में से प्रत्येक का एक उदाहरण दीजिए।
2. सहकारी बैंक, ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में, किन कार्यों के लिए साख उपलब्ध कराते हैं? प्रत्येक के दो उदाहरण दीजिए।
3. भारत में बैंकिंग प्रणाली के शिखर पर कौन है?

आपने क्या सीखा

- बैंक एक संगठन है जो जनता से जमा स्वीकार करता है और लोगों को ऋण देता है।
- ऋण दाता के रूप में साख सृजन करके बैंक अपनी जमा में वृद्धि कर सकता है।

- साख से अभिप्राय, ऋणियों से भुगतान प्राप्त करने के दावों से है।
- भारत में भारतीय रिजर्व बैंक, बैंकिंग प्रणाली का शिखर है।
- विभिन्न प्रकार के बैंक जो देश में कार्य कर रहे हैं, भारतीय रिजर्व बैंक के अतिरिक्त व्यवसायिक बैंक, सहकारी बैंक तथा विकास बैंक हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. बैंक के दो कार्यों की व्याख्या कीजिए।
2. साख क्या है? बैंक साख का सृजन कैसे करता है?
3. भारत में विभिन्न प्रकार के बैंक कौन से हैं?
4. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।

   (i) भारतीय रिजर्व बैंक

   (ii) सहकारी बैंक

   (iii) व्यवसायिक बैंक

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 15.2

1. 10 प्रतिशत
2. (अ) 200 रु. (ब) 180 रु. (स) 380 रु.

पाठगत प्रश्न 15.3

3. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया